



सामुदायिक बीज बैंक द्वारा जैव विविधता का सशक्तिकरण

निखिल ठाकुर¹, जसदीप कौर², दीपा शर्मा¹ और विनीत शर्मा¹

भारत की कृषि प्रणाली सदियों से जैव विविधता पर आधारित रही है, जहाँ किसानों ने स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार फसलों की पारंपरिक किस्मों का संरक्षण किया है। किंतु आधुनिक कृषि पद्धतियों, संकर बीजों पर बढ़ती निर्भरता, जलवायु परिवर्तन तथा एकरूपी खेती के कारण कृषि जैव विविधता लगातार घट रही है। ऐसे समय में सामुदायिक बीज बैंक जैव विविधता संरक्षण और टिकाऊ कृषि के प्रभावी माध्यम के रूप में उभर रहे हैं। सामुदायिक बीज बैंक स्थानीय स्तर पर देसी एवं पारंपरिक बीजों के संरक्षण, पुनरुत्पादन और किसानों के बीच आदान-प्रदान की व्यवस्था प्रदान करते हैं। ये बीज बैंक किसानों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल बीज उपलब्ध करवाकर आत्मनिर्भरता, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा तथा जलवायु अनुकूल खेती को बढ़ावा देते हैं। साथ ही, यह पहल किसानों के पारंपरिक ज्ञान और कृषि संस्कृति को भी संरक्षित करती है। प्रस्तुत लेख में सामुदायिक बीज बैंकों की अवधारणा, उनकी कार्यप्रणाली, जैव विविधता संरक्षण में भूमिका, सामाजिक-आर्थिक लाभ, चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है।

भारत की पारंपरिक कृषि प्रणाली जैव विविधता, आत्मनिर्भरता और प्रकृति के साथ सामंजस्य पर आधारित रही है। प्रत्येक क्षेत्र में किसान अपनी आवश्यकता, स्वाद और स्थानीय जलवायु के अनुसार बीजों का चयन और संरक्षण करते थे। किंतु आधुनिक कृषि पद्धतियों, संकर बीजों पर बढ़ती निर्भरता और एकरूपी खेती के कारण अनेक देसी किस्में धीरे-धीरे विलुप्त होती गई। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण ने पारंपरिक बीजों के संरक्षण

¹डॉ० यशवन्त सिंह परमार औद्योगिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन, हिमाचल प्रदेश,
²चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

महिलाओं और युवाओं का अहम योगदान

महिलाएँ पारंपरिक रूप से बीज संरक्षण की मुख्य संरक्षक रही हैं। सामुदायिक बीज बैंकों में उनकी भागीदारी बीज चयन, भंडारण और पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वहीं, युवा वर्ग डिजिटल रिकॉर्डिंग, नई तकनीकों और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से इन पहलों को आधुनिक स्वरूप प्रदान करता है। इससे ग्रामीण युवाओं में कृषि और जैव विविधता संरक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

की आवश्यकता को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। ऐसे में सामुदायिक बीज बैंक किसानों की कृषि विरासत और जैव विविधता को सुरक्षित रखने का प्रभावी माध्यम बनकर उभरे हैं।

सामुदायिक बीज बैंक किसानों द्वारा संचालित ऐसी सामूहिक व्यवस्था है, जिसका उद्देश्य देसी एवं पारंपरिक बीजों का संरक्षण, पुनरुत्पादन और आदान-प्रदान करना है। यह व्यवस्था किसानों को बीजों के प्रति आत्मनिर्भर बनाती है तथा “बीज पर किसान का अधिकार” सुनिश्चित करती है। सामुदायिक बीज बैंक केवल बीज भंडारण केंद्र नहीं, बल्कि स्थानीय ज्ञान और कृषि परंपराओं के संरक्षण के केंद्र भी होते हैं।

चुनौतियों का समाधान

सामुदायिक बीज बैंकों को जागरूकता की कमी, वैज्ञानिक भंडारण सुविधाओं के अभाव तथा सीमित वित्तीय संसाधनों जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कई बार किसानों को पारंपरिक बीजों के महत्व और संरक्षण तकनीकों की पर्याप्त जानकारी नहीं होती। ऐसी परिस्थितियों में प्रशिक्षण कार्यक्रम, वैज्ञानिक भंडारण तकनीकों का उपयोग, संस्थागत सहयोग और प्रभावी नीति समर्थन इन पहलों को मजबूत बना सकते हैं। कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान संस्थान किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन और प्रशिक्षण प्रदान कर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।



बीजों का संरक्षण

कृषि जैव विविधता का संरक्षण:

सामुदायिक बीज बैंक विभिन्न फसलों की पारंपरिक किस्मों को संरक्षित कर कृषि जैव विविधता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह विविधता खेती को अधिक लचीला बनाती है तथा कीट-रोग और प्रतिकूल मौसम के प्रभाव को कम करने में सहायता करती है। साथ ही, स्थानीय किस्में कम रासायनिक आदान में भी बेहतर प्रदर्शन करती हैं, जिससे पर्यावरणीय संतुलन और मृदा स्वास्थ्य बनाए रखने में मदद मिलती है।

जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में

महत्व: अनियमित वर्षा, बढ़ते तापमान और मौसम की अनिश्चितता के दौर में सामुदायिक बीज बैंक किसानों के लिए सुरक्षा कवच का कार्य करते हैं। कई पारंपरिक किस्में कम पानी में भी उत्पादन देने में सक्षम होती हैं तथा विपरीत परिस्थितियों को सहन कर लेती हैं। इस प्रकार, ये बीज बैंक जलवायु अनुकूल खेती को बढ़ावा देने में सहायक हैं।

गाँव स्तर पर स्थापना एवं संचालन:

सामुदायिक बीज बैंक की स्थापना किसानों की सक्रिय भागीदारी से की जाती है। इसमें बीज संग्रह, वर्गीकरण, वैज्ञानिक भंडारण तथा बीज वितरण की पारदर्शी व्यवस्था अपनाई जाती है। समय-समय पर प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर किसानों को बीज संरक्षण की तकनीकों से अवगत करवाया जाता है।

बीज आदान-प्रदान और सामाजिक

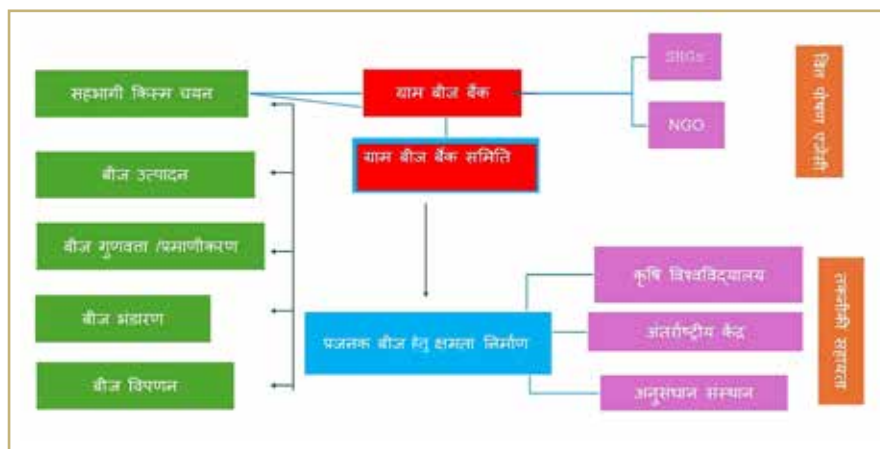
एकजुटता: बीजों का आदान-प्रदान सामुदायिक बीज बैंक की प्रमुख विशेषता है। यह व्यवस्था किसानों के बीच सहयोग, विश्वास और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत करती है। इससे ग्रामीण समाज में सामाजिक एकजुटता बढ़ती है तथा जैव विविधता संरक्षण को सामूहिक अभियान का स्वरूप मिलता है।

आजीविका, पोषण और स्वास्थ्य

सुरक्षा: सामुदायिक बीज बैंक किसानों की आजीविका को मजबूत करने के साथ-साथ

पोषण सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। पारंपरिक फसलें एवं सब्जियाँ सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर होती हैं, जिससे ग्रामीण परिवारों के आहार में विविधता बढ़ती है और कुपोषण की समस्या कम करने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त, रासायनिक आदानों पर निर्भरता घटने से पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सामुदायिक बीज बैंक केवल जैव विविधता संरक्षण की पहल नहीं हैं, बल्कि ये टिकाऊ कृषि, ग्रामीण आजीविका और खाद्य सुरक्षा का मजबूत आधार भी हैं। उचित प्रोत्साहन और नीति समर्थन मिलने पर ये भारत की कृषि प्रणाली को अधिक आत्मनिर्भर, पर्यावरण अनुकूल और जलवायु सहिष्णु बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। वास्तव में, सामुदायिक बीज बैंक गाँवों को जैव विविधता के संरक्षक तथा भविष्य की पीढ़ियों के लिए आशा के केंद्र के रूप में स्थापित करते हैं।



ग्राम बीज बैंक संगठन कार्य प्रणाली

लेखकों से अनुरोध

आज सूचना प्रौद्योगिकी के बदले हुए कदमों को हमारे पाठक और लेखक दोनों ने पहचाना है। पाठकगण लेखकों से सीधी बात कर सकें, इसलिए हम चाहते हैं कि सभी लेखक अपने लेख पोर्टल epatrika.icar.org.in में भेजने के साथ ई-मेल पता तथा मोबाइल नम्बर अवश्य दें।

संपादक